

श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

Mahabharata

(द्वितीय खण्ड) Vol. 2

[वनपर्व और विराटपर्व]

(सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित)



अनुवादक—

पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

भीमरिः वनपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
(अरण्यपर्व)					
१-	पाण्डवोंका वनगमन, पुरवासियोंद्वारा उनका अनुगमन और युधिष्ठिरके अनुरोध करनेपर उनमेंसे वहुतोंका लौटना तथा पाण्डवोंका प्रमाण-कोटितीर्थमें रात्रिवास ...	१४५	१४-	द्युतके समय न पहुँचनेमें श्रीकृष्णके द्वारा शाल्व-के साथ युद्ध करने और सौभविमानसहित उसे नष्ट करनेका संक्षिप्त वर्णन ...	१९०
२-	धनके दोष, अतिथि-सत्कारकी महत्ता तथा कल्याण-के उपायोंके विषयमें धर्मराज युधिष्ठिरसे ब्राह्मणों तथा शौनकजीकी बातचीत ...	१४९	१५-	सौभ-नाशकी विस्तृत कथाके प्रसङ्गमें द्वारकामें युद्धसम्बन्धी रक्षात्मक तैयारियोंका वर्णन ...	१९२
३-	युधिष्ठिरके द्वारा अन्नके लिये भगवान् सूर्यकी उपासना और उनसे अक्षयपात्रकी प्राप्ति ...	१५५	१६-	शाल्वकी विशाल सेनाके आक्रमणका यादवसेना-द्वारा प्रतिरोध, साम्बद्वारा क्षेमवृद्धिकी पराजय, वेगवान्का वध तथा चारुदेणद्वारा विविन्ध्यदैत्य-का वध एवं प्रद्युम्नद्वारा सेनाको आश्वासन ...	१९४
४-	विदुरजीका धृतराष्ट्रको हितकी सलाह देना और धृतराष्ट्रका रुष्ट होकर महलमें चला जाना ...	१६१	१७-	प्रद्युम्न और शाल्वका घोर युद्ध ...	१९७
५-	पाण्डवोंका काम्यकवनमें प्रवेश और विदुरजीका वहाँ जाकर उनसे मिलना और बातचीत करना ...	१६३	१८-	मूर्च्छाविस्थामें सारथिके द्वारा रणभूमिसे बाहर लाये जानेपर प्रद्युम्नका अनुताप और इसके लिये सारथिको उपालम्भ देना ...	१९८
६-	धृतराष्ट्रका संजयको भेजकर विदुरको वनसे बुलवाना और उनसे क्षमा-प्रार्थना ...	१६६	१९-	प्रद्युम्नके द्वारा शाल्वकी पराजय ...	१००१
७-	दुर्योधन, दुःशासन, द्रुपद और कर्णकी सलाह, पाण्डवोंका वध करनेके लिये उनका वनमें जाने-की तैयारी तथा व्यासजीका आकर उनको रोकना ...	१६८	२०-	श्रीकृष्ण और शाल्वका भीषण युद्ध ...	१००३
८-	व्यासजीका धृतराष्ट्रसे दुर्योधनके अन्यायको रोकनेके लिये अनुरोध ...	१६९	२१-	श्रीकृष्णका शाल्वकी मायासे मोहित होकर पुनः सजग होना ...	१००५
९-	व्यासजीके द्वारा सुरभि और इन्द्रके उपाख्यानका वर्णन तथा उनका पाण्डवोंके प्रति दया दिखलाना ...	१७०	२२-	शाल्ववधोपाख्यानकी समाप्ति और युधिष्ठिरकी आज्ञा लेकर श्रीकृष्ण, धृष्टद्युम्न तथा अन्य सब राजाओंका अपने-अपने नगरको प्रस्थान ...	१००७
१०-	व्यासजीका जाना, मैत्रेयजीका धृतराष्ट्र और दुर्योधनसे पाण्डवोंके प्रति सद्भावका अनुरोध तथा दुर्योधनके अशिष्ट व्यवहारसे रुष्ट होकर उसे शाप देना ...	१७२	२३-	पाण्डवोंका द्वैतवनमें जानेके लिये उद्यत होना और प्रजावर्गकी व्याकुलता ...	१०११
(किर्मीरवधपर्व)					
११-	भीमसेनके द्वारा किर्मीरके वधकी कथा ...	१७५	२४-	पाण्डवोंका द्वैतवनमें जाना ...	१०१३
(अर्जुनाभिगमनपर्व)					
१२-	अर्जुन और द्रौपदीके द्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी स्तुति, द्रौपदीका भगवान् श्रीकृष्णसे अपने प्रति किये गये अपमान और दुःखका वर्णन और भगवान् श्रीकृष्ण, अर्जुन एवं धृष्टद्युम्नका उसे आश्वासन देना ...	१८०	२५-	महर्षि मार्कण्डेयका पाण्डवोंको धर्मका आदेश देकर उत्तर दिशाकी ओर प्रस्थान ...	१०१५
१३-	श्रीकृष्णका जूएके दोष बताते हुए पाण्डवोंपर आयी हुई विपत्तिमें अपनी अनुपस्थितिको कारण मानना ...	१८९	२६-	दलभपुत्र बकका युधिष्ठिरको ब्राह्मणोंका महत्त्व बतलाना ...	१०१७
			२७-	द्रौपदीका युधिष्ठिरसे उनके शत्रुविषयक क्रोधको उभाड़नेके लिये संतापपूर्ण वचन ...	१०१९
			२८-	द्रौपदीद्वारा प्रह्लाद-बलि-संवादका वर्णन—तेज और क्षमाके अवसर ...	१०२२
			२९-	युधिष्ठिरके द्वारा क्रोधकी निन्दा और क्षमाभावकी विशेष प्रशंसा ...	१०२४
			३०-	दुःखसे मोहित द्रौपदीका युधिष्ठिरकी बुद्धि, धर्म एवं ईश्वरके न्यायपर आशेष ...	१०२८
			३१-	युधिष्ठिरद्वारा द्रौपदीके आक्षेपका समाधान तथा ईश्वर, धर्म और महापुरुषोंके आदरसे लभ और अनादरसे हानि ...	१०३१

- ३२-द्रौपदीका पुरुषार्थकी प्रधान मानकर पुरुषार्थ करनेके लिये जोर देना ... १०३४
- ३३-भीमसेनका पुरुषार्थकी प्रशंसा करना और युधिष्ठिरको उत्तेजित करते हुए क्षत्रिय-धर्मके अनुसार युद्ध छेड़नेका अनुरोध ... १०३८
- ३४-धर्म और नीतिकी बात कहते हुए युधिष्ठिरकी अपनी प्रतिज्ञाके पालनरूप धर्मपर ही डटे रहनेकी प्रोपणा ... १०४४
- ३५-दुःखित भीमसेनका युधिष्ठिरको युद्धके लिये उत्साहित करना ... १०४७
- ३६-युधिष्ठिरका भीमसेनको समझाना; व्यासजीका आगमन और युधिष्ठिरको प्रतिस्मृतिविद्या-प्रदान तथा पाण्डवोंका पुनः काम्यकवनगमन १०४९
- ३७-अर्जुनका सब भाई आदिसे मिलकर इन्द्रकील पर्वतपर जाना एवं इन्द्रका दर्शन करना ... १०५२
- (कैरातपर्व)
- ३८-अर्जुनकी उग्र तपस्या और उसके विषयमें ऋषियोंका भगवान् शङ्करके साथ वार्तालाप ... १०५६
- ३९-भगवान् शङ्कर और अर्जुनका युद्ध; अर्जुनपर उनका प्रसन्न होना एवं अर्जुनके द्वारा भगवान् शङ्करकी स्तुति ... १०५९
- ४०-भगवान् शङ्करका अर्जुनको वरदान देकर अपने धामको प्रस्थान ... १०६५
- ४१-अर्जुनके पास दिक्पालोंका आगमन एवं उन्हें दिव्यास्त्र-प्रदान तथा इन्द्रका उन्हें स्वर्गमें चलनेका आदेश देना ... १०६७
- (इन्द्रलोकाभिगमनपर्व)
- ४२-अर्जुनका हिमालयसे विदा होकर मातलिके साथ स्वर्गलोकको प्रस्थान ... १०७०
- ४३-अर्जुनद्वारा देवराज इन्द्रका दर्शन तथा इन्द्र-सभामें उनका स्वागत ... १०७३
- ४४-अर्जुनको अस्त्र और मञ्जीतकी शिक्षा ... १०७५
- ४५-चित्रसेन और उर्यशीका वार्तालाप ... १०७६
- ४६-उर्यशीका कामपोंडित होकर अर्जुनके पास जाना और उनके अस्त्रोंका करनेपर उन्हें शाप देकर लौट आना ... १०७७
- ४७-लोमश मुनिका स्वर्गमें इन्द्र और अर्जुनसे मिलकर उनका संदेश ले काम्यकवनमें आना ... १०८२
- ४८-दुःखित धृतराष्ट्रका संजयके सम्मुख अपने पुत्रों-के लिये चिन्ता करना ... १०८४
- ४९-संजयके द्वारा धृतराष्ट्रकी बातोंका अनुमोदन और धृतराष्ट्रका संताप ... १०८६
- ५०-वनमें पाण्डवोंका आहार ... १०८८
- ५१-संजयका धृतराष्ट्रके प्रति श्रीकृष्णादिके द्वारा की हुई दुर्योधनादिके वधकी प्रतिज्ञाका वृत्तान्त सुनाना ... १०८८
- (नलोपाख्यानपर्व)
- ५२-भीमसेन-युधिष्ठिर-संवाद; बृहदश्वका आगमन तथा युधिष्ठिरके पूछनेपर बृहदश्वके द्वारा नलोपाख्यानकी प्रस्तावना ... १०९१
- ५३-नल-दमयन्तीके गुणोंका वर्णन; उनका परस्पर अनुराग और इसका दमयन्ती और नलको एक दूसरेके संदेश सुनाना ... १०९५
- ५४-स्वर्गमें नारद और इन्द्रकी बातचीत; दमयन्तीके स्वयंवरके लिये राजाओं तथा लोकपालोंका प्रस्थान ... १०९८
- ५५-नलका दूत बनकर राजमहलमें जाना और दमयन्तीको देवताओंका संदेश सुनाना ... ११००
- ५६-नलका दमयन्तीसे वार्तालाप करना और लौट-कर देवताओंको उसका संदेश सुनाना ... ११०२
- ५७-स्वयंवरमें दमयन्तीद्वारा नलका वरण; देवताओं-का नलको वर देना; देवताओं और राजाओं-का प्रस्थान; नल-दमयन्तीका विवाह एवं नलका यशानुष्ठान और संतानोत्पादन ... ११०४
- ५८-देवताओंके द्वारा नलके गुणोंका गान और उनके निषेध करनेपर भी नलके विषद कलियुगका कोप ... ११०८
- ५९-नलमें कलियुगका प्रवेश एवं नल और पुष्कर-की धृत्क्रीडा; प्रजा और दमयन्तीके निवारण करनेपर भी राजाका धृत्तसे निवृत्त नहीं होना ११०९
- ६०-दुःखित दमयन्तीका वार्ष्णेयके द्वारा कुमार-कुमारीको कुण्डिनपुर भेजना ... १११०
- ६१-नलका जूएमें हारकर दमयन्तीके साथ वनको जाना और पक्षियोंद्वारा आपद्भूत नलके वस्त्रका अपहरण ... १११२
- ६२-राजा नलकी चिन्ता और दमयन्तीको अकेली सोती छोड़कर उनका अन्यत्र प्रस्थान ... १११५
- ६३-दमयन्तीका विलाप तथा अजगर एवं व्याधसे उसके प्राण एवं सतीत्वकी रक्षा तथा दमयन्ती-के पातिव्रत्यधर्मके प्रभावसे व्याधका विनाश ... १११७
- ६४-दमयन्तीका विलाप और प्रलाप; तपस्वियोंद्वारा दमयन्तीको आश्वासन तथा उसकी व्यापारियोंके दलसे भेंट ... ११२०

- ७१-जंगली हाथियोंद्वारा व्यापारियोंके दलका सर्वनाश तथा दुःखित दमयन्तीका चेदिराजके भवनमें सुखपूर्वक निवास ... ११२८
- ६६-राजा नलके द्वारा दावानलसे कर्कोटक नागकी रक्षा तथा नागद्वारा नलको आश्वासन ... ११३४
- ६७-राजा नलका ऋतुपर्णके यहाँ अश्वघ्नके पदपर नियुक्त होना और वहाँ दमयन्तीके लिये निरन्तर चिन्तित रहना तथा उनकी जीविलसे बातचीत ... ११३६
- ६८-विदर्भराजका नल-दमयन्तीकी खोजके लिये ब्राह्मणोंको भोजना, सुदेव ब्राह्मणका चेदिराजके भवनमें जाकर मन-ही-मन दमयन्तीके गुणोंका चिन्तन और उससे भेंट करना ... ११३७
- ६९-दमयन्तीका अपने पिताके यहाँ जाना और वहाँसे नलको ढूँढ़नेके लिये अपना संदेश देकर ब्राह्मणोंको भोजना ... ११४०
- ७०-पर्णादका दमयन्तीसे बाहुकरूपधारी नलका समाचार बताना और दमयन्तीका ऋतुपर्णके यहाँ सुदेव नामक ब्राह्मणको स्वयंवरका संदेश देकर भोजना ... ११४४
- ७१-राजा ऋतुपर्णका विदर्भदेशको प्रस्थान, राजा नलके विषयमें बाण्यका विचार और बाहुककी अद्भुत अश्वसंचालन-कलासे बाण्य और ऋतुपर्णका प्रभावित होना ... ११४६
- ७२-ऋतुपर्णके उत्तरीय वस्त्र गिरने और बहेड़ेके वृक्षके फलोंको गिननेके विषयमें नलके साथ ऋतुपर्णकी बातचीत, ऋतुपर्णसे नलको द्यूतविद्याके रहस्यकी प्राप्ति और उनके शरीरसे कलियुगका निकलना ... ११४९
- ७३-ऋतुपर्णका कुण्डिनपुरमें प्रवेश, दमयन्तीका विचार तथा भीमके द्वारा ऋतुपर्णका स्वागत ... ११५२
- ७४-बाहुक-केशिनी-संवाद ... ११५४
- ७५-दमयन्तीके आदेशसे केशिनीद्वारा बाहुककी परीक्षा तथा बाहुकका अपने लड़के-लड़कियोंको देखकर उनसे प्रेम करना ... ११५७
- ७६-दमयन्ती और बाहुककी बातचीत, नलका प्राकट्य और नल-दमयन्ती-मिलन ... ११५९
- ७७-नलके प्रकट होनेपर विदर्भनगरमें महान् उत्सवका आयोजन, ऋतुपर्णके साथ नलका वार्तालाप और ऋतुपर्णका नलसे अश्वविद्या सीखकर अयोध्या जाना ... ११६३
- ७८-राजा नलका पुष्करको जूएमें हराना और उसको राजधानीमें भेजकर अपने नगरमें प्रवेश करना ... ११६५

- ७९-राजा नलके आख्यानके कीर्तनका महत्त्व, बृहदश्व मुनिका युधिष्ठिरको आश्वासन देना तथा द्यूतविद्या और अश्वविद्याका रहस्य बताकर जाना ... ११६७

(तीर्थयात्रापर्व)

- ८०-अर्जुनके लिये द्रौपदीसहित पाण्डवोंकी चिन्ता ... ११६९
- ८१-युधिष्ठिरके पास देवर्षि नारदका आगमन और तीर्थयात्राके फलके सम्बन्धमें पूछनेपर नारदजी-द्वारा भीष्म-पुलस्त्य-संवादकी प्रस्तावना ... ११७१
- ८२-भीष्मजीके पूछनेपर पुलस्त्यजीका उन्हें विभिन्न तीर्थोंकी यात्राका माहात्म्य बताना ... ११७३
- ८३-कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित अनेक तीर्थोंकी महत्ताका वर्णन ... ११८१
- ८४-नाना प्रकारके तीर्थोंकी महिमा ... ११९३
- ८५-गङ्गासागर, अयोध्या, चित्रकूट, प्रयाग आदि विभिन्न तीर्थोंकी महिमाका वर्णन और गङ्गाका माहात्म्य ... १२०२
- ८६-युधिष्ठिरका धौम्य मुनिसे पुण्य तपोवन, आश्रम एवं नदी आदिके विषयमें पूछना ... १२१०
- ८७-धौम्यद्वारा पूर्वदिशाके तीर्थोंका वर्णन ... १२११
- ८८-धौम्यमुनिके द्वारा दक्षिणदिशावर्ती तीर्थोंका वर्णन ... १२१३
- ८९-धौम्यद्वारा पश्चिमदिशाके तीर्थोंका वर्णन ... १२१५
- ९०-धौम्यद्वारा उत्तर दिशाके तीर्थोंका वर्णन ... १२१६
- ९१-महर्षि लोमशका आगमन और युधिष्ठिरसे अर्जुनके पाशुपत आदि दिव्यास्त्रोंकी प्राप्ति का वर्णन तथा इन्द्रका संदेश सुनाना ... १२१९
- ९२-महर्षि लोमशके मुखसे इन्द्र और अर्जुनका संदेश सुनकर युधिष्ठिरका प्रसन्न होना और तीर्थयात्राके लिये उद्यत हो अपने अधिक साधियोंको विदा करना ... १२२१
- ९३-ऋषियोंको नमस्कार करके पाण्डवोंका तीर्थ-यात्राके लिये विदा होना ... १२२३
- ९४-देवताओं और धर्मात्मा राजाओंका उदाहरण देकर महर्षि लोमशका युधिष्ठिरको अधर्मसे हानि बताना और तीर्थयात्राजनित पुण्यकी महिमाका वर्णन करते हुए आश्वासन देना ... १२२५
- ९५-पाण्डवोंका नैमिषारण्य आदि तीर्थोंमें जाकर प्रयाग तथा गया तीर्थमें जाना और गय राजाके महान् यशोंकी महिमा सुनाना ... १२२६
- ९६-इल्वल और वातापिका वर्णन, महर्षि अगस्त्यका पितरोंके उद्धारके लिये विवाह करनेका विचार तथा विदर्भराजका महर्षि अगस्त्यसे एक कन्या पाना ... १२२८

- १७-महर्षि अगस्त्यका लोपामुद्रासे विवाह;
गङ्गाद्वारमें तपस्या एवं पत्नीकी इच्छासे धन-
संग्रहके लिये प्रस्थान ... १२३१
- १८-धन प्राप्त करनेके लिये अगस्त्यका श्रुतर्वा;
ब्रध्नश्व और त्रसदस्यु आदिके पास जाना ... १२३३
- १९-अगस्त्यजीका इत्थलके यहाँ धनके लिये
जाना; वातापि तथा इत्थलका वध; लोपामुद्रा-
को पुत्रकी प्राप्ति तथा श्रीरामके द्वारा हरे हुए
तेजकी परशुरामको तीर्थस्नानद्वारा पुनः प्राप्ति १२३४
- १००-वृत्रासुरसे प्रसूत देवताओंको महर्षि दधीचिका
अस्थिदान एवं वज्रका निर्माण ... १२४०
- १०१-वृत्रासुरका वध और असुरोंकी भयंकर मन्त्रणा १२४२
- १०२-कालेयोंद्वारा तपस्वियों; मुनियों और ब्रह्मचारियों
आदिका संहार तथा देवताओंद्वारा भगवान्
विष्णुकी स्तुति ... १२४४
- १०३-भगवान् विष्णुके आदेशसे देवताओंका महर्षि
अगस्त्यके आश्रमपर जाकर उनकी स्तुति करना १२४५
- १०४-अगस्त्यजीका विन्ध्यपर्वतको बढ़नेसे रोकना
और देवताओंके साथ सागर-तटपर जाना ... १२४७
- १०५-अगस्त्यजीके द्वारा समुद्रपान और देवताओं-
का कालेय दैत्योंका वध करके ब्रह्माजीसे
समुद्रको पुनः भरनेका उपाय पृष्ठना ... १२४९
- १०६-राजा सगरका संतानके लिये तपस्या करना
और शिवजीके द्वारा वरदान पाना ... १२५१
- १०७-सगरके पुत्रोंकी उत्पत्ति; साठ हजार सगर-
पुत्रोंका कपिलकी क्रोधाग्निसे भस्म होना;
असमञ्जसका परित्याग; अंशुमान्के प्रयत्नसे
सगरके यशकी पूर्ति; अंशुमान्से दिलीपको
और दिलीपसे भगीरथको राज्यकी प्राप्ति ... १२५३
- १०८-भगीरथका हिमालयपर तपस्याद्वारा गङ्गा और
महादेवजीको प्रसन्न करके उनसे वरप्राप्त करना १२५७
- १०९-पृथ्वीपर गङ्गाजीके उतरने और समुद्रको जल-
से भरनेका विवरण तथा सगरपुत्रोंका उद्धार १२५९
- ११०-नन्दा तथा कौशिकीका माहात्म्य; ऋष्यशृङ्ग
मुनिका उपाख्यान और उनको अपने राज्यमें
लानेके लिये राजा लोमपादका प्रयत्न ... १२६१
- १११-वेदयाका ऋष्यशृङ्गको लुभाना और विभाण्डक
मुनिका आश्रमपर आकर अपने पुत्रकी
चिन्ताका कारण पृष्ठना ... १२६५
- ११२-ऋष्यशृङ्गका पिताको अपनी चिन्ताका कारण
बताते हुए ब्रह्मचारीरूपधारी वेदयाके स्वरूप
और आचरणका वर्णन ... १२६७
- ११३-ऋष्यशृङ्गका अङ्गराज लोमपादके यहाँ जाना;
राजाका उन्हें अपनी कन्या देना; राजाद्वारा
विभाण्डक मुनिका सत्कार तथा उनपर मुनि-
का प्रसन्न होना ... १२६९
- ११४-युधिष्ठिरका कौशिकी; गङ्गासागर एवं वैतरणी
नदी होते हुए महेन्द्रपर्वतपर गमन ... १२७२
- ११५-अकृतव्रणके द्वारा युधिष्ठिरसे परशुरामजीके
उपाख्यानके प्रसङ्गमें ऋचीक मुनिका गाधि-
कन्याके साथ विवाह और भृगुऋषिकी कृपासे
जमदग्नि की उत्पत्तिका वर्णन ... १२७५
- ११६-पिताकी आज्ञासे परशुरामजीका अपनी माता-
का मस्तक काटना और उन्हींके वरदानसे
पुनः जिलाना; परशुरामजीद्वारा कार्तवीर्य
अर्जुनका वध और उसके पुत्रोंद्वारा जमदग्नि
मुनिकी हत्या ... १२७८
- ११७-परशुरामजीका पिताके लिये विलाप और
पृथ्वीको इक्कीस बार निःश्वस्त्रिय करना एवं
महाराज युधिष्ठिरके द्वारा परशुरामजीका पूजन १२८१
- ११८-युधिष्ठिरका विभिन्न तीर्थमें होते हुए प्रभास-
क्षेत्रमें पहुँचकर तपस्यामें प्रवृत्त होना और
यादवोंका पाण्डवोंसे मिलना ... १२८२
- ११९-प्रभासतीर्थमें बलरामजीके पाण्डवोंके प्रति
सहानुभूतिपूर्वक दुःखपूर्ण उद्गार ... १२८५
- १२०-सात्यकिके शौर्यपूर्ण उद्गार तथा युधिष्ठिरद्वारा
श्रीकृष्णके वचनोंका अनुमोदन एवं पाण्डवों-
का पयोध्या नदीके तटपर निवास ... १२८७
- १२१-राजा गयके यशकी प्रशंसा; पयोध्या; वैदूर्य
पर्वत और नर्मदाके माहात्म्य तथा च्यवन-
सुकन्याके चरित्रका आरम्भ ... १२९१
- १२२-महर्षि च्यवनको सुकन्याकी प्राप्ति ... १२९३
- १२३-अश्विनीकुमारोंकी कृपासे महर्षि च्यवनको
सुन्दर रूप और युवावस्थाकी प्राप्ति ... १२९५
- १२४-शर्यातिके यशमें च्यवनका इन्द्रपर कोप करके
वज्रको स्तम्भित करना और उसे मारनेके लिये
मदासुरको उत्पन्न करना ... १२९७
- १२५-अश्विनीकुमारोंका यशमें भाग स्वीकार कर लेनेपर
इन्द्रका संकटमुक्त होना तथा लोमशजीके
द्वारा अन्यान्य तीर्थोंके महत्त्वका वर्णन ... १२९९
- १२६-राजा मान्धाताकी उत्पत्ति और संक्षिप्त चरित्र १३०१
- १२७-सोमक और जन्तुका उपाख्यान ... १३०४
- १२८-सोमकको सौ पुत्रोंकी प्राप्ति तथा सोमक और
पुरोहितका समानरूपसे नरक और पुण्यलोकों-
का उपभोग करना ... १३०६

- १२९-कुरुक्षेत्रके द्वारभूत प्रक्षप्रसवणनामक यमुना-
तीर्थ एवं सरस्वतीतीर्थकी महिमा ... १३०७
- १३०-विभिन्न तीर्थोंकी महिमा और राजा उशीनर-
की कथाका आरम्भ ... १३०९
- १३१-राजा उशीनरद्वारा राजको अपने शरीरका मांस
देकर शरणमें आये हुए कबूतरके प्राणोंकी
रक्षा करना ... १३११
- १३२-अष्टावक्रके जन्मका वृत्तान्त और उनका राजा
जनकके दरबारमें जाना ... १३१३
- १३३-अष्टावक्रका द्वारपाल तथा राजा जनकसे
वार्तालाप ... १३१६
- १३४-बन्दी और अष्टावक्रका शास्त्रार्थ; बन्दीकी
पराजय तथा समझामें स्नानसे अष्टावक्रके
अङ्गोंका सीधा होना ... १३२०
- १३५-कर्मिलक्षेत्र आदि तीर्थोंकी महिमा; रैभ्य
एवं भरद्वाजपुत्र यवक्रीत मुनिकी कथा तथा
ऋषियोंका अनिष्ट करनेके कारण मेधावीकी
मृत्यु ... १३२६
- १३६-यवक्रीतका रैभ्यमुनिकी पुत्रवधूके साथ
व्यभिचार और रैभ्यमुनिके क्रोधसे उत्पन्न
राक्षसके द्वारा उसकी मृत्यु ... १३३०
- १३७-भरद्वाजका पुत्रशोकसे विलाप करना; रैभ्य-
मुनिकी शाप देना एवं स्वयं अग्निमें प्रवेश
करना ... १३३१
- १३८-अर्वावसुकी तपस्याके प्रभावसे परावसुका
ब्रह्महत्यासे मुक्त होना और रैभ्य; भरद्वाज
तथा यवक्रीत आदिका पुनर्जीवित होना ... १३३३
- १३९-पाण्डवोंकी उत्तराखण्ड-यात्रा और लोमशजी-
द्वारा उसकी दुर्गमताका कथन ... १३३५
- १४०-भीमसेनका उत्साह तथा पाण्डवोंका कुलिन्द-
राज सुबाहुके राज्यमें होते हुए गन्धमादन
और हिमालय पर्वतको प्रस्थान ... १३३७
- १४१-युधिष्ठिरका भीमसेनसे अर्जुनको न देखनेके
कारण मानसिक चिन्ता प्रकट करना एवं
उनके गुणोंका स्मरण करते हुए गन्धमादन
पर्वतपर जानेका दृढ़ निश्चय करना ... १३३९
- १४२-पाण्डवोंद्वारा गङ्गाजीकी वन्दना; लोमशजीका
नरकासुरके बध और भगवान् वाराहद्वारा
वसुधाके उद्धारकी कथा कहना ... १३४१
- १४३-गन्धमादनकी यात्राके समय पाण्डवोंका आँधी-
पानीसे सामना ... १३४५

- १४४-द्रौपदीकी मूर्छा; पाण्डवोंके उपचारसे उसका
सचेत होना तथा भीमसेनके स्मरण करनेपर
घटोत्कचका आगमन ... १३४७
- १४५-घटोत्कच और उसके साथियोंकी सहायतासे
पाण्डवोंका गन्धमादन पर्वत एवं बदरिकाश्रममें
प्रवेश तथा बदरीवृक्ष; नरनारायणाश्रम और
गङ्गाका वर्णन ... १३४९
- १४६-भीमसेनका सौगन्धिक कमल लानेके लिये
जाना और कदली वनमें उनकी हनुमान्जी-
से मेंट ... १३५३
- १४७-श्रीहनुमान् और भीमसेनका संवाद ... १३५९
- १४८-हनुमान्जीका भीमसेनको संक्षेपसे श्रीरामका
चरित्र सुनाना ... १३६२
- १४९-हनुमान्जीके द्वारा चारों युगोंके
धर्मोंका वर्णन ... १३६३
- १५०-हनुमान्जीके द्वारा भीमसेनको अपने विशाल
रूपका प्रदर्शन और चारों वर्णोंके धर्मोंका
प्रतिपादन ... १३६६
- १५१-हनुमान्जीका भीमसेनको आश्वासन और
विदा देकर अन्तर्धान होना ... १३७०
- १५२-भीमसेनका सौगन्धिक वनमें पहुँचना ... १३७२
- १५३-क्रोधवश नामक राक्षसोंका भीमसेनसे सरोवर-
के निकट आनेका कारण पूछना ... १३७३
- १५४-भीमसेनके द्वारा क्रोधवश नामक राक्षसोंकी
पराजय और द्रौपदीके लिये सौगन्धिक
कमलोंका संग्रह करना ... १३७४
- १५५-भयंकर उत्पात देखकर युधिष्ठिर आदिकी
चिन्ता और सबका गन्धमादन पर्वतपर
सौगन्धिकवनमें भीमसेनके पास पहुँचना ... १३७६
- १५६-पाण्डवोंका आकाशवाणीके आदेशसे पुनः
नरनारायणाश्रममें लौटना ... १३७९

(जटासुरवधपर्व)

- १५७-जटासुरके द्वारा द्रौपदीसहित युधिष्ठिर; नकुल,
सहदेवका हरण तथा भीमसेनद्वारा जटासुर-
का वध ... १३८०

(यक्षयुद्धपर्व)

- १५८-नर-नारायण-आश्रमसे वृषपर्वाके वहाँ होते
हुए राजर्षि आर्षिपेणके आश्रमपर जाना ... १३८५
- १५९-प्रश्नके रूपमें आर्षिपेणका युधिष्ठिरके प्रति उपदेश १३९३

- १६०-पाण्डवोंका आश्रमपर निवास,
द्रौपदीके अनुरोधसे भीमसेनका पर्वतके शिखर-
पर जाना और वनों तथा राक्षसोंसे युद्ध करके
मणिमान्का वध करना ... १३९५
- १६१-कुवेरका गन्धमादन पर्वतपर आगमन और
युधिष्ठिरसे उनकी भेंट ... १४००
- १६२-कुवेरका युधिष्ठिर आदिको उपदेश और
सान्त्वना देकर अपने भवनको प्रस्थान ... १४०४
- १६३-धौम्यका युधिष्ठिरको मेरु पर्वत तथा उसके
शिखरोंपर स्थित ब्रह्मा, विष्णु आदिके स्थानों-
का लक्ष्य कराना और सूर्य-चन्द्रमाकी गति
एवं प्रभावका वर्णन ... १४०७
- १६४-पाण्डवोंकी अर्जुनके लिये उत्कण्ठा और अर्जुन-
का आगमन ... १४१०

(निवातकवचयुद्धपर्व)

- १६५-अर्जुनका गन्धमादनपर्वतपर आकर अपने
भाइयोंसे मिलना ... १४१२
- १६६-इन्द्रका पाण्डवोंके पास आना और युधिष्ठिर-
को सान्त्वना देकर स्वर्गको लौटना ... १४१३
- १६७-अर्जुनके द्वारा अपनी तपस्यायात्राके वृत्तान्त-
का वर्णन; भगवान् शिवके साथ संग्राम और
पाशुपतास्त्र-प्राप्तिकी कथा ... १४१५
- १६८-अर्जुनद्वारा स्वर्गलोकमें अपनी अस्त्रशिक्षा और
निवातकवच दानवोंके साथ युद्धकी तैयारीका
कथन ... १४१९
- १६९-अर्जुनका पातालमें प्रवेश और निवातकवचों-
के साथ युद्धारम्भ ... १४२५
- १७०-अर्जुन और निवातकवचोंका युद्ध ... १४२६
- १७१-दानवोंके मायामय युद्धका वर्णन ... १४२८
- १७२-निवातकवचोंका संहार ... १४३०
- १७३-अर्जुनद्वारा हिरण्यपुरवासी पौलोम तथा
कालकेयोंका वध और इन्द्रद्वारा अर्जुनका
अभिनन्दन ... १४३३
- १७४-अर्जुनके मुखसे यात्राका वृत्तान्त सुनकर
युधिष्ठिरद्वारा उनका अभिनन्दन और
दिव्यास्त्रदर्शनकी इच्छा प्रकट करना ... १४३८
- १७५-नारद आदिका अर्जुनको दिव्यास्त्रोंके प्रदर्शन-
से रोकना ... १४३९

(आजगरपर्व)

- १७६-भीमसेनकी युधिष्ठिरसे बातचीत और पाण्डवों-
का गन्धमादनसे प्रस्थान ... १४४१

- १७७-पाण्डवोंका गन्धमादनसे बदरिकाश्रम;
सुबाहुनगर और विशांप्रयूप वनमें होते हुए
सरस्वती-तटवर्ती द्वैतवनमें प्रवेश ... १४४३
- १७८-महाबली भीमसेनका हंसक पशुओंको मारना
और अजगरद्वारा पकड़ा जाना ... १४४६
- १७९-भीमसेन और सर्परूपधारी नहुषकी बात-
चीत; भीमसेनकी चिन्ता तथा युधिष्ठिर-
द्वारा भीमकी खोज ... १४४८
- १८०-युधिष्ठिरका भीमसेनके पास पहुँचना और
सर्परूपधारी नहुषके प्रश्नोंका उत्तर देना ... १४५२
- १८१-युधिष्ठिरद्वारा अपने प्रश्नोंका उचित उत्तर
पाकर संतुष्ट हुए सर्परूपधारी नहुषका
भीमसेनको छोड़ देना तथा युधिष्ठिरके साथ
वार्तालाप करनेके प्रभावसे सर्पयोनिसे मुक्त
होकर स्वर्ग जाना ... १४५५

(मार्कण्डेयसमास्यापर्व)

- १८२-वर्षा और शरद्-ऋतुका वर्णन एवं युधिष्ठिर
आदिका पुनः द्वैतवनसे काम्यकवनमें प्रवेश १४५९
- १८३-काम्यकवनमें पाण्डवोंके पास भगवान्
श्रीकृष्ण; मुनिवर मार्कण्डेय तथा नारदजीका
आगमन एवं युधिष्ठिरके पूछनेपर मार्कण्डेयजी-
के द्वारा कर्मफल-भोगका विवेचन ... १४६०
- १८४-तपस्वी तथा स्वधर्मपरायण ब्राह्मणोंका माहात्म्य १४६९
- १८५-ब्राह्मणकी महिमाके विषयमें अत्रिमुनि तथा
राजा पृथुकी प्रशंसा ... १४७१
- १८६-तार्क्ष्यमुनि और सरस्वतीका संवाद ... १४७३
- १८७-वैवस्वत मनुका चरित्र तथा मत्स्यावतारकी
कथा ... १४७७
- १८८-चारों युगोंकी वर्ष-संख्या एवं कलियुगके
प्रभावका वर्णन; प्रलयकालका दृश्य और
मार्कण्डेयजीको बालमुकुन्दजीके दर्शन;
मार्कण्डेयजीका भगवान्के उदरमें प्रवेशकर
ब्रह्माण्डदर्शन करना और फिर बाहर निकल-
कर उनसे वार्तालाप करना ... १४८१
- १८९-भगवान् बालमुकुन्दका मार्कण्डेयको अपने
स्वरूपका परिचय देना तथा मार्कण्डेयद्वारा
श्रीकृष्णकी महिमाका प्रतिपादन और पाण्डवों-
का श्रीकृष्णकी शरणमें जाना ... १४९०
- १९०-युगान्तकालिक कलियुगके समयके वर्तावका
तथा कल्कि-अवतारका वर्णन ... १४९४
- १९१-भगवान् कल्कीके द्वारा सत्ययुगकी स्थापना
और मार्कण्डेयजीका युधिष्ठिरके लिये धर्मोपदेश १५००

- १९२-इक्ष्वाकुवंशी परीक्षितका मण्डूकराजकी कन्यासे
विवाह, शल और दलके चरित्र तथा वामदेव
मुनिकी महत्ता ... १५०२
- १९३-इन्द्र और वक्र मुनिका संवाद ... १५०९
- १९४-शत्रिय राजाओंका महत्त्व-मुहोत्र और शिविकी
प्रशंसा ... १५१२
- १९५-राजा यवातिद्वारा ब्राह्मणको सहस्र गौओंका
दान ... १५१३
- १९६-सेदुक और वृषदर्भका चरित्र ... १५१४
- १९७-इन्द्र और अग्निद्वारा राजा शिविकी परीक्षा १५१५
- १९८-देवर्षि नारदद्वारा शिविकी महत्ताका पतिपादन १५१८
- १९९-राजा इन्द्रयुग्म तथा अन्य चिरजीवी प्राणियों-
की कथा ... १५२१
- २००-निन्दित दान, निन्दित जन्म, योग्य दानपात्र,
श्राद्धमें ग्राह्य और अग्राह्य ब्राह्मण, दानपात्रके
लक्षण, अतिथि-सत्कार, विविध दानोंका
महत्त्व, वाणीकी शुद्धि, गायत्री-जप, चित्तशुद्धि
तथा इन्द्रियनिग्रह आदि विविध विषयोंका
वर्णन ... १५२३
- २०१-उत्तङ्ककी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान्का
उन्हें वरदान देना तथा इक्ष्वाकुवंशी
राजा कुवलाश्वका धुन्धुमार नाम पड़नेका कारण
बताना ... १५३२
- २०२-उत्तङ्कका राजा बृहदश्वसे धुन्धुका वध करनेके
लिये आग्रह ... १५३५
- २०३-ब्रह्माजीकी उत्पत्ति और भगवान् विष्णुके
द्वारा मधु-कैटभका वध ... १५३७
- २०४-धुन्धुकी तपस्या और वरप्राप्ति, कुवलाश्वद्वारा
धुन्धुका वध और देवताओंका कुवलाश्वको
वर देना ... १५३९
- २०५-पतिव्रता स्त्री तथा पिता-माताकी सेवाका
माहात्म्य ... १५४२
- २०६-कौशिक ब्राह्मण और पतिव्रताके उपाख्यानके
अन्तर्गत ब्राह्मणोंके धर्मका वर्णन ... १५४४
- २०७-कौशिकका धर्मव्याधके पास जाना, धर्मव्याध-
के द्वारा पतिव्रतासे प्रेरित जान लेनेपर
कौशिकको आश्चर्य होना, धर्मव्याधके द्वारा
वर्णधर्मका वर्णन, जनकुराज्यकी प्रशंसा और
शिष्टाचारका वर्णन ... १५४८
- २०८-धर्मव्याधद्वारा हिंसा और अहिंसाका विवेचन १५५५
- २०९-धर्मकी सूक्ष्मता, शुभाशुभ कर्म और उनके
फल तथा ब्रह्मकी प्रातिके उपायोंका वर्णन १५५७
- २१०-विषयसेवनसे हानि, सत्सङ्गसे लाभ और
ब्राह्मी विद्याका वर्णन ... १५६१
- २११-पञ्चमहाभूतोंके गुणोंका और इन्द्रियनिग्रहका
वर्णन ... १५६३
- २१२-तीनों गुणोंके स्वरूप और फलका वर्णन ... १५६५
- २१३-प्राणवायुकी स्थितिका वर्णन तथा परमात्म-
साक्षात्कारके उपाय ... १५६६
- २१४-माता-पिताकी सेवाका दिग्दर्शन ... १५७०
- २१५-धर्मव्याधका कौशिक ब्राह्मणको माता-पिताकी
सेवाका उपदेश देकर अपने पूर्वजन्मकी कथा
कहते हुए व्याध होनेका कारण बताना ... १५७२
- २१६-कौशिक-धर्मव्याध-संवादका उपसंहार तथा
कौशिकका अपने घरको प्रस्थान ... १५७४
- २१७-अग्निका अङ्गिराको अपना प्रथम पुत्र स्वीकार
करना तथा अङ्गिरासे बृहस्पतिकी उत्पत्ति ... १५७७
- २१८-अङ्गिराकी संततिका वर्णन ... १५७९
- २१९-बृहस्पतिकी संततिका वर्णन ... १५७९
- २२०-पाञ्चजन्य अग्निकी उत्पत्ति तथा उसकी
संततिका वर्णन ... १५८१
- २२१-अग्निस्वरूप तप और भानु (मनुकी) संतति-
का वर्णन ... १५८३
- २२२-सह नामक अग्निका जलमें प्रवेश और अथर्वा
अङ्गिराद्वारा पुनः उनका प्राकट्य ... १५८६
- २२३-इन्द्रके द्वारा केशीके हाथसे देवसेनाका उद्धार १५८८
- २२४-इन्द्रका देवसेनाके साथ ब्रह्माजीके पास तथा
ब्रह्मर्षियोंके आश्रमपर जाना, अग्निका मोह
और वनगमन ... १५८९
- २२५-स्वाहाका मुनिपत्नियोंके रूपोंमें अग्निसे साथ
समागम, स्कन्दकी उत्पत्ति तथा उनके द्वारा
क्रौञ्च आदि पर्वतोंका विदारण ... १५९३
- २२६-विश्वामित्रका स्कन्दके जातकर्मादि तेरह
संस्कार करना और विश्वामित्रके समझानेपर
भी ऋषियोंका अपनी पत्नियोंको स्वीकार न
करना तथा अग्निदेव आदिके द्वारा बालक
स्कन्दकी रक्षा करना ... १५९५
- २२७-पराजित होकर शरणमें आये हुए इन्द्रसहित
देवताओंको स्कन्दका अभयदान ... १५९८
- २२८-स्कन्दके पार्षदोंका वर्णन ... १५९९

- २२९-स्कन्दका इन्द्रके साथ वार्तालाप; देवसेनापति-
के पदपर अभिषेक तथा देवसेनाके साथ
उनका विवाह ... १६००
- २३०-कृत्तिकाओंको नक्षत्रमण्डलमें स्थानकी प्राप्ति
तथा मनुष्योंको कष्ट देनेवाले विविध ग्रहोंका
वर्णन ... १६०४
- २३१-स्कन्दद्वारा स्वाहादेवीका स्तकार; रुद्रदेवके
साथ स्कन्द और देवताओंकी भद्रवट-यात्रा;
देवासुर-संग्राम; महिषासुर-वध तथा स्कन्दकी
प्रशंसा ... १६०९
- २३२-कार्तिकेयके प्रसिद्ध नामोंका वर्णन तथा
उनका स्तवन ... १६१६

(द्रौपदीसत्यभामासंवादपर्व)

- २३३-द्रौपदीका सत्यभामाको सती स्त्रीके कर्तव्यकी
शिक्षा देना ... १६१८
- २३४-पतिदेवको अनुकूल करनेका उपाय-पतिकी
अनन्यभावसे सेवा ... १६२३
- २३५-सत्यभामाका द्रौपदीको आश्वासन देकर
श्रीकृष्णके साथ द्वारिकाको प्रस्थान ... १६२४

(घोषयात्रापर्व)

- २३६-पाण्डवोंका समाचार सुनकर धृतराष्ट्रका खेद
और चिन्तापूर्ण उद्गार ... १६२६
- २३७-शकुनि और कर्णका दुर्योधनकी प्रशंसा करते
हुए उसे वनमें पाण्डवोंके पास चलनेके
लिये उभाड़ना ... १६२९
- २३८-दुर्योधनके द्वारा कर्ण और शकुनिकी मन्त्रणा
स्वीकार करना तथा कर्ण आदिका घोषयात्रा-
को निमित्त बनाकर द्वैतवनमें जानेके लिये
धृतराष्ट्रसे आज्ञा लेने जाना ... १६३१
- २३९-कर्ण आदिके द्वारा द्वैतवनमें जानेका प्रस्ताव;
राजा धृतराष्ट्रकी अस्वीकृति; शकुनिका
समझाना; धृतराष्ट्रका अनुमति देना तथा
दुर्योधनका प्रस्थान ... १६३३
- २४०-दुर्योधनका सेनासहित वनमें जाकर गौओंकी
देखभाल करना और उसके सैनिकों एवं
गन्धर्वोंमें परस्पर कटु संवाद ... १६३५
- २४१-कौरवोंका गन्धर्वोंके साथ युद्ध और कर्णकी
पराजय ... १६३८
- २४२-गन्धर्वोंद्वारा दुर्योधन आदिकी पराजय और
उनका अपहरण ... १६४०

- २४३-युधिष्ठिरका भीमसेनको गन्धर्वोंके हाथसे
कौरवोंको छुड़ानेका आदेश और इसके लिये
अर्जुनकी प्रतिज्ञा ... १६४२
- २४४-पाण्डवोंका गन्धर्वोंके साथ युद्ध ... १६४४
- २४५-पाण्डवोंके द्वारा गन्धर्वोंकी पराजय ... १६४६
- २४६-चित्रसेन; अर्जुन तथा युधिष्ठिरका संवाद और
दुर्योधनका छुटकारा ... १६४८
- २४७-सेनासहित दुर्योधनका मार्गमें ठहरना और
कर्णके द्वारा उसका अभिनन्दन ... १६५०
- २४८-दुर्योधनका कर्णको अपनी पराजयका समाचार
बताना ... १६५१
- २४९-दुर्योधनका कर्णसे अपनी ग्लानिका वर्णन करते
हुए आमरण अनशनका निश्चय; दुःशासनको
राजाधननेका आदेश; दुःशासनका दुःख और
कर्णका दुर्योधनको समझाना ... १६५३
- २५०-कर्णके समझानेपर भी दुर्योधनका आमरण
अनशन करनेका ही निश्चय ... १६५६
- २५१-शकुनिके समझानेपर भी दुर्योधनको प्रायोप-
वेशनसे विचलित होते न देखकर दैत्योंका
कृत्याद्वारा उसे रसातलमें बुलाना ... १६५७
- २५२-दानवोंका दुर्योधनको समझाना और कर्णके
अनुरोध करनेपर दुर्योधनका अनशन त्याग
करके हस्तिनापुरको प्रस्थान ... १६५९
- २५३-भीष्मका कर्णकी निन्दा करते हुए दुर्योधन-
को पाण्डवोंसे संधि करनेका परामर्श देना;
कर्णके क्षोभपूर्ण वचन और दिग्विजयके लिये
प्रस्थान ... १६६३
- २५४-कर्णके द्वारा सारी पृथ्वीपर दिग्विजय और
हस्तिनापुरमें उसका स्तकार ... १६६५
- २५५-कर्ण और पुरोहितकी सलाहसे दुर्योधनकी
वैष्णवयज्ञके लिये तैयारी ... १६६७
- २५६-दुर्योधनके यज्ञका आरम्भ एवं समाप्ति ... १६६९
- २५७-दुर्योधनके यज्ञके विषयमें लोगोंका मत; कर्ण-
द्वारा अर्जुनके वधकी प्रतिज्ञा; युधिष्ठिरकी
चिन्ता तथा दुर्योधनकी शासननीति ... १६७१

(मृगस्वप्नोद्भवपर्व)

- २५८-पाण्डवोंका काम्यकवनमें गमन ... १६७३

(त्रीहिद्रौणिकपर्व)

- २५९-युधिष्ठिरकी चिन्ता; व्यासजीका पाण्डवोंके
पास आगमन और दानकी महत्ताका
प्रतिपादन ... १६७४

- २६०-दुर्वासाद्वारा महर्षि मुद्गलके दानधर्म एवं धैर्यकी परीक्षा तथा मुद्गलका देवदूतसे कुछ प्रश्न करना १६७७
 २६१-देवदूतद्वारा स्वर्गलोकके गुण-दोषोंका तथा दोषरहित विष्णुधामका वर्णन सुनकर मुद्गलका देवदूतको लौटा देना एवं व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाकर अपने आश्रमको लौट जाना १६८०

(द्रौपदीहरणपर्व)

- २६२-दुर्योधनका महर्षि दुर्वासाको आतिथ्यसत्कारसे संतुष्ट करके उन्हें युधिष्ठिरके पास भेजकर प्रसन्न होना ... १६८४
 २६३-दुर्वासाका पाण्डवोंके आश्रमपर असमयमें आतिथ्यके लिये जाना; द्रौपदीके द्वारा स्मरण किये जानेपर भगवान्का प्रकट होना तथा पाण्डवोंको दुर्वासाके भयसे मुक्त करना और उनको आश्वासन देकर द्वारका जाना ... १६८६
 २६४-जयद्रथका द्रौपदीको देखकर मोहित होना और उसके पास कोटिकास्यको भेजना १६८९
 २६५-कोटिकास्यका द्रौपदीसे जयद्रथ और उसके साथियोंका परिचय देते हुए उसका भी परिचय पूछना ... १६९१
 २६६-द्रौपदीका कोटिकास्यको उत्तर ... १६९२
 २६७-जयद्रथ और द्रौपदीका संवाद ... १६९३
 २६८-द्रौपदीका जयद्रथको फटकारना और जयद्रथ-द्वारा उसका अपहरण ... १६९५
 २६९-पाण्डवोंका आश्रमपर लौटना और धात्रेयिका-से द्रौपदीहरणका वृत्तान्त जानकर जयद्रथका पीछा करना ... १६९८
 २७०-द्रौपदीद्वारा जयद्रथके सामने पाण्डवोंके पराक्रमका वर्णन ... १७०१
 २७१-पाण्डवोंद्वारा जयद्रथकी सेनाका संहार; जयद्रथका पलायन; द्रौपदी तथा नकुल-सहदेवके साथ युधिष्ठिरका आश्रमपर लौटना तथा भीम और अर्जुनका वनमें जयद्रथका पीछा करना ... १७०४

(जयद्रथविमोक्षणपर्व)

- २७२-भीमद्वारा बंदी होकर जयद्रथका युधिष्ठिरके सामने उपस्थित होना; उनकी आज्ञासे छूटकर उसका गङ्गाद्वारमें तप करके भगवान् शिवसे वरदान पाना तथा भगवान् शिवद्वारा अर्जुनके सहायक भगवान् श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन ... १७०८

(रामोपाख्यानपर्व)

- २७३-अपनी दुरवस्थासे दुखी हुए युधिष्ठिरका मार्कण्डेय मुनिसे प्रश्न करना ... १७१४
 २७४-श्रीराम आदिका जन्म तथा कुबेरकी उत्पत्ति और उन्हें ऐश्वर्यकी प्राप्ति ... १७१५
 २७५-रावण; कुम्भकर्ण; विभीषण; खर और शूर्पणखाकी उत्पत्ति; तपस्या और वर-प्राप्ति तथा कुबेरका रावणको शाप देना ... १७१६
 २७६-देवताओंका ब्रह्माजीके पास जाकर रावणके अत्याचारसे बचानेके लिये प्रार्थना करना तथा ब्रह्माजीकी आज्ञासे देवताओंका रीछ और वानरयोनिमें संतान उत्पन्न करना एवं दुन्दुभी गन्धर्वीका मन्थरा बनकर आना ... १७१९
 २७७-श्रीरामके राज्याभिषेककी तैयारी; राम-वन-गमन; भरतकी चित्रकूटयात्रा; रामके द्वारा खर-दूषण आदि राक्षसोंका नाश तथा रावण-का मारीचके पास जाना ... १७२१
 २७८-मृगरूपधारी मारीचका वध तथा सीताका अपहरण ... १७२५
 २७९-रावणद्वारा जटायुका वध; श्रीरामद्वारा उसका अन्त्येष्टि-संस्कार; कबन्धका वध तथा उसके दिव्यस्वरूपसे वार्तालाप ... १७२९
 २८०-राम और सुग्रीवकी मित्रता; वाली और सुग्रीवका युद्ध; श्रीरामके द्वारा वालीका वध तथा लङ्काकी अशोकवाटिकामें राक्षसियोंद्वारा डरायी हुई सीताको त्रिजटाका आश्वासन ... १७३३
 २८१-रावण और सीताका संवाद ... १७३८
 २८२-श्रीरामका सुग्रीवपर कोप; सुग्रीवका सीताकी खोजमें वानरोंको भेजना तथा श्रीहनुमान्जीका लौटकर अपनी लङ्कायात्राका वृत्तान्त निवेदन करना ... १७४०
 २८३-वानर-सेनाका संगठन; सेतुका निर्माण; विभीषणका अभिषेक और लङ्काकी सीमामें सेनाका प्रवेश तथा अंगदको रावणके पास दूत बनाकर भेजना ... १७४५
 २८४-अंगदका रावणके पास जाकर रामका संदेश सुनाकर लौटना तथा राक्षसों और वानरोंका घोर संग्राम ... १७४९

- २८५-श्रीराम और रावणकी सेनाओंका द्वन्द्व-युद्ध १७५२
 २८६-प्रहस्त और धूम्राश्वके वधसे दुखी हुए
 रावणका कुम्भकर्णको जगाना और उसे
 युद्धमें भेजना ... १७५४
 २८७-कुम्भकर्ण, वज्रवेग और प्रमाथीका वध ... १७५६
 २८८-इन्द्रजित्का मायामय युद्ध तथा श्रीराम और
 लक्ष्मणकी मूर्छा ... १७५८
 २८९-श्रीराम-लक्ष्मणका सचेत होकर कुबेरके भेजे
 हुए अभिमन्त्रित जलसे प्रमुख वानरोंसहित
 अपने नेत्र धोना; लक्ष्मणद्वारा इन्द्रजित्का
 वध एवं सीताको मारनेके लिये उद्यत हुए
 रावणका अविन्ध्यके द्वारा निवारण करना १७६०
 २९०-राम और रावणका युद्ध तथा रावणका वध १७६२
 २९१-श्रीरामका सीताके प्रति संदेह; देवताओंद्वारा
 सीताकी शुद्धिका समर्थन; श्रीरामका दल-
 बलसहित लङ्कासे प्रस्थान एवं किष्किन्धा होते
 हुए अयोध्यामें पहुँचकर भरतसे मिलना तथा
 राज्यपर अभिषिक्त होना ... १७६५
 २९२-मार्कण्डेयजीके द्वारा राजा युधिष्ठिरको आश्वासन १७७०

(पतिव्रतामाहात्म्यपर्व)

- २९३-राजा अश्वपतिको देवी सावित्रीके वरदानसे
 सावित्री नामक कन्याकी प्राप्ति तथा सावित्रीका
 पतिवरणके लिये विभिन्न देशोंमें भ्रमण १७७१
 २९४-सावित्रीका सत्यवान्के साथ विवाह करनेका
 दृढ़ निश्चय ... १७७४
 २९५-सत्यवान् और सावित्रीका विवाह तथा
 सावित्रीका अपनी सेवाओंद्वारा सबको
 संतुष्ट करना ... १७७७
 २९६-सावित्रीकी व्रतचर्या तथा सास-ससुर और
 पतिकी आज्ञा लेकर सत्यवान्के साथ उसका
 वनमें जाना ... १७७९
 २९७-सावित्री और यमका संवाद; यमराजका
 संतुष्ट होकर सावित्रीको अनेक वरदान देते हुए
 मरे हुए सत्यवान्को भी जीवित कर देना
 तथा सत्यवान् और सावित्रीका वार्तालाप एवं
 आश्रमकी ओर प्रस्थान ... १७८२

- २९८-पत्नीसहित राजा युमत्सेनकी सत्यवान्के लिये
 चिन्ता; ऋषियोंका उन्हें आश्वासन देना; सावित्री
 और सत्यवान्का आगमन तथा सावित्रीद्वारा
 विलम्बसे आनेके कारणपर प्रकाश डालते
 हुए वर-प्राप्तिका विवरण बताना ... १७९३
 २९९-शाल्वदेशकी प्रजाके अनुरोधसे महाराज
 युमत्सेनका राज्याभिषेक कराना तथा सावित्री-
 को सौ पुत्रों और सौ भाइयोंकी प्राप्ति ... १७९६

(कुण्डलाहरणपर्व)

- ३००-सूर्यका स्वप्नमें कर्णको दर्शन देकर उसे
 इन्द्रको कुण्डल और कवच न देनेके लिये
 सचेत करना तथा कर्णका आग्रहपूर्वक
 कुण्डल और कवच देनेका ही निश्चय रखना १७९८
 ३०१-सूर्यका कर्णको समझाते हुए उसे इन्द्रको
 कुण्डल न देनेका आदेश देना ... १८००
 ३०२-सूर्य-कर्ण-संवाद; सूर्यकी आज्ञाके अनुसार
 कर्णका इन्द्रसे शक्ति लेकर ही उन्हें कुण्डल
 और कवच देनेका निश्चय ... १८०२
 ३०३-कुन्तिभोजके यहाँ महर्षि दुर्वासाका आगमन
 तथा राजाका उनकी सेवाके लिये पृथाको
 आवश्यक उपदेश देना ... १८०४
 ३०४-कुन्तीका पितासे वार्तालाप और ब्राह्मणकी
 परिचर्या ... १८०६
 ३०५-कुन्तीकी सेवासे संतुष्ट होकर तपस्वी ब्राह्मणका
 उसको मन्त्रका उपदेश देना ... १८०७
 ३०६-कुन्तीके द्वारा सूर्यदेवताका आवाहन तथा
 कुन्ती-सूर्य-संवाद ... १८०९
 ३०७-सूर्यद्वारा कुन्तीके उदरमें गर्भस्थापन ... १८११
 ३०८-कर्णका जन्म; कुन्तीका उसे पिटारीमें रखकर
 जलमें बहा देना और विलाप करना ... १८१३
 ३०९-अधिरथ सूत तथा उसकी पत्नी राधाको
 बालक कर्णकी प्राप्ति; राधाके द्वारा उसका
 पालन; हस्तिनापुरमें उसकी शिक्षा-दीक्षा
 तथा कर्णके पास इन्द्रका आगमन ... १८१५
 ३१०-इन्द्रका कर्णको अमोघ-शक्ति देकर बदलेमें
 उसके कवच-कुण्डल लेना ... १८१७

(आरण्यपर्व)

- ३११-ब्राह्मणकी अरणि एवं मन्थन-काष्ठका पत्ता
 लगानेके लिये पाण्डवोंका मृगके पीछे दौड़ना
 और दुखी होना ... १८२०

३१२-पानी लानेके लिये गये हुए नकुल आदि
चार भाइयोंका सरोवरके तटपर अचेत
होकर गिरना ... १८२२
३१३-यक्ष और युधिष्ठिरका प्रश्नोत्तर तथा युधिष्ठिर-
के उत्तरसे संतुष्ट हुए यक्षका चारों भाइयोंके
जीवित होनेका वरदान देना ... १८२५

३१४-यक्षका चारों भाइयोंको जिलाकर धर्मके
रूपमें प्रकट हो युधिष्ठिरको वरदान देना ... १८३५
३१५-अज्ञातवासके लिये अनुमति लेते समय
शोकाकुल हुए युधिष्ठिरको महर्षि धौम्यका
समझाना, भीमसेनका उत्साह देना तथा
आश्रमसे दूर जाकर पाण्डवोंका परस्पर
परामर्शके लिये बैठना ... १८३७

चित्र-सूची

(तिरंगा)

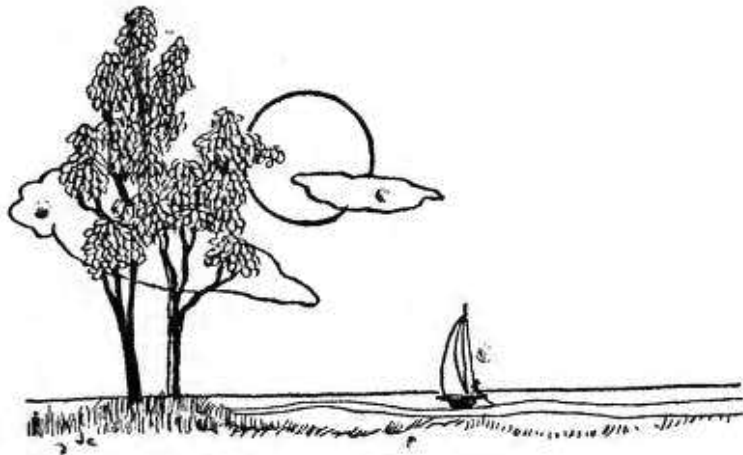
१-पाण्डवोंका वनगमन ... १४५
२-उर्वशीका अर्जुनको शाप देना ... १०८१
३-नलका अपने पूर्वरूपमें प्रकट
होकर दमयन्तीसे मिलना ... ११६२
४-भगवान् शिवका आकाशसे गिरती हुई
गङ्गाको अपने सिरपर धारण करना ... ११९३
५-जमदग्नि परशुरामसे कार्तवीर्य-
अर्जुनका अपराध बताना ... १२८०
६-महाप्रलयके समय भगवान् मत्स्यके
सींगमें बँधी हुई मनु और सप्तर्षियों-
सहित नौका ... १३९३
७-मार्कण्डेय मुनिको अक्षयवटकी शाखा-
पर वाल्मुकुन्दका दर्शन ... १४८७
८-इन्द्रके द्वारा देवसेनाका
स्कन्दको समर्पण ... १५९३
९-सागके एक पत्तेसे विश्वकी वृत्ति ... १६८७

(सादा)

१०-भगवान् सूर्यका युधिष्ठिरको
अक्षयपात्र देना ... १६०
११-श्रीकृष्णके द्वारा द्रौपदीको आश्वासन ... १९७
१२-द्रौपदी और भीमसेनका युधिष्ठिरसे संवाद ... १०२८
१३-अर्जुनकी तपस्या ... १०६१
१४-अर्जुनका किरातवेषधारी
भगवान् शिवपर बाण चलाना ... १०६१

१५-नलकी पहचानके लिये दमयन्तीकी
लोकपालोंसे प्रार्थना ... ११०५
१६-सती दमयन्तीके तेजसे
पापी व्याधका विनाश ... ११२०
१७-भगवान् शङ्करका मङ्गलक
मुनिको नृत्य करनेसे रोकना ... ११८८
१८-देवताओंद्वारा वृत्रासुरके वधके लिये
दधीचिसे उनकी अस्थियोंकी याचना ... १२४१
१९-देवराज इन्द्रका वज्रके प्रहारसे
वृत्रासुरका वध करना ... १२४१
२०-महर्षि कपिलकी क्रोधाग्निमें सगर-
पुत्रोंका भस्म होना ... १२५५
२१-महर्षि अगस्त्यका समुद्र-पान ... १२५५
२२-भगवान् परशुरामद्वारा सहस्रार्जुनका वध ... १२८५
२३-प्रभासक्षेत्रमें पाण्डवोंकी यादवोंसे भेंट ... १२८५
२४-सुकन्याकी अश्विनीकुमारोंसे अपने
पतिको बतला देनेकी प्रार्थना ... १२९६
२५-राजा शिविका कबूतरकी रक्षाके लिये वाजको
अपने शरीरका मांस काटकर देना ... १३१३
२६-द्रौपदीका भीमसेनको तौगन्धिक पुष्प
भेंट करके वैसे ही और पुष्प लानेका आग्रह ... १३५३
२७-स्वर्गसे लौटकर अर्जुन धर्मराजको
प्रणाम कर रहे हैं ... १४१२

२८-वनमें पाण्डवोंसे श्रीकृष्ण-सत्यभामाका मिलना	१४६१	३५-द्रौपदी-सत्यभामा-संवाद	...	१६१९
२९-तार्क्ष्यको सरस्वतीका उपदेश	...	१४७५	३६-अर्जुन-चित्रसेन-युद्ध	...
३०-तपस्वीके वेशमें मण्डूकराजका राजाको आश्वासन	...	१५०४	३७-पाण्डवोंके पास दुर्योधनका दूत	...
३१-ययातिसे ब्राह्मणकी याचना	...	१५०४	३८-सुद्रलका स्वर्ग जानेसे इन्कार	...
३२-भगवान् विष्णुके द्वारा मधुकैटभका जाँघोंपर बध	...	१५३९	३९-सीताजीका रावणको फटकारना	...
३३-माता-पिताके भक्त धर्मव्याध और कौशिक ब्राह्मण	...	१५७०	४०-हनुमान्जीकी श्रीसीताजीसे भेंट	...
३४-कालिकेयके द्वारा महिषासुरका बध	...	१६१५	४१-यम-सावित्री	...
			४२-इन्द्रका शक्ति-दान	...
			४३-युधिष्ठिर और बगुलारूपधारी यक्ष	...
			४४-(१८४ लाइन चित्र परमोंमें)	...



विराटपर्व

अध्याय

विषय

पृष्ठ-संख्या

अध्याय

विषय

पृष्ठ-संख्या

(पाण्डवप्रवेशपर्व)

- १-विराटनगरमें अज्ञातवास करने के लिये पाण्डवों-
की गुप्त मन्त्रणा तथा युधिष्ठिरके द्वारा अपने
भावी कार्यक्रमका दिग्दर्शन ... १८४१
- २-भीमसेन और अर्जुनद्वारा विराटनगरमें किये
जानेवाले अपने अनुकूल कार्योंका निर्देश १८४३
- ३-नकुल, सहदेव तथा द्रौपदीद्वारा अपने-अपने
भावी कर्तव्योंका दिग्दर्शन ... १८४६
- ४-धौम्यका पाण्डवोंको राजाके यहाँ रहनेका ढंग
बताना और सबका अपने-अपने अभीष्ट
स्थानोंको जाना ... १८४८
- ५-पाण्डवोंका विराटनगरके समीप पहुँचकर
श्मशानमें एक शमीवृक्षपर अपने अस्त्र-शस्त्र रखना १८५३
- ६-युधिष्ठिरद्वारा दुर्गादेवीकी स्तुति और देवीका
प्रत्यक्ष प्रकट होकर उन्हें वर देना ... १८५५
- ७-युधिष्ठिरका राजसभामें जाकर विराटसे मिलना
और वहाँ आदरपूर्वक निवास पाना ... १८५८
- ८-भीमसेनका राजा विराटकी सभामें प्रवेश और
राजाके द्वारा आश्वासन पाना ... १८६१
- ९-द्रौपदीका सैरन्ध्रीके वेशमें विराटके रनिवासमें
जाकर रानी सुदेष्णासे वार्तालाप करना और
वहाँ निवास पाना ... १८६३
- १०-सहदेवका राजा विराटके साथ वार्तालाप और
गौओंकी देख-भालके लिये उनकी नियुक्ति १८६६
- ११-अर्जुनका राजा विराटसे मिलना और राजाके
द्वारा कन्याओंको नृत्य आदिकी शिक्षा देनेके
लिये उनको नियुक्त करना ... १८६८
- १२-नकुलका विराटके अश्वोंकी देख-रेखमें नियुक्त
होना ... १८७०

(समयपालनपर्व)

- १३-भीमसेनके द्वारा जीमूत नामक विश्वविख्यात
मल्लका वध ... १८७२

(कीचकवधपर्व)

- १४-कीचकका द्रौपदीपर आसक्त हो उससे प्रणय-
याचना करना और द्रौपदीका उसे फटकारना १८७६
- १५-रानी सुदेष्णाका द्रौपदीको कीचकके घर
भेजना ... १८८१
- १६-कीचकद्वारा द्रौपदीका अपमान ... १८८५
- १७-द्रौपदीका भीमसेनके समीप जाना ... १८९५
- १८-द्रौपदीका भीमसेनके प्रति अपने दुःखके उद्गार
प्रकट करना ... १८९६
- १९-पाण्डवोंके दुःखसे दुःखित द्रौपदीका भीमसेनके
सम्मुख विलाप ... १८९९

- २०-द्रौपदीद्वारा भीमसेनसे अपना दुःख निवेदन
करना ... १९०३
- २१-भीमसेन और द्रौपदीका संवाद ... १९०५
- २२-कीचक और भीमसेनका युद्ध तथा कीचकवध १९०९
- २३-उपकीचकोंका सैरन्ध्रीको बाँधकर श्मशानभूमिमें
ले जाना और भीमसेनका उन सबको मारकर
सैरन्ध्रीको छुड़ाना ... १९१५
- २४-द्रौपदीका राजमहलमें लौटकर आना और
बृहन्नल एवं सुदेष्णासे उसकी बातचीत १९१८

(गोहरणपर्व)

- २५-दुर्योधनके पास उसके गुप्तचरोंका आना और
उनका पाण्डवोंके विषयमें कुछ पता न लगा-
यह बताकर कीचकवधका वृत्तान्त सुनाना १९२१
- २६-दुर्योधनका सभासदोंसे पाण्डवोंका पता लगाने-
के लिये परामर्श तथा इस विषयमें कर्ण और
दुःशासनकी सम्मति ... १९२३
- २७-आचार्य द्रोणकी सम्मति ... १९२४
- २८-युधिष्ठिरकी महिमा कहते हुए भीष्मकी पाण्डवों-
के अन्वेषणके विषयमें सम्मति ... १९२५
- २९-कृपाचार्यकी सम्मति और दुर्योधनका निश्चय १९२८
- ३०-सुशर्माके प्रस्तावके अनुसार त्रिगर्तों और
कौरवोंका मत्स्यदेशपर धावा ... १९३०
- ३१-चारों पाण्डवोंसहित राजा विराटकी सेनाका
युद्धके लिये प्रस्थान ... १९३२
- ३२-मत्स्य तथा त्रिगर्तदेशीय सेनाओंका परस्पर युद्ध १९३५
- ३३-सुशर्माका विराटको पकड़कर ले जाना, पाण्डवों-
के प्रयत्नसे उनका छुटकारा, भीमद्वारा सुशर्मा-
का निग्रह और युधिष्ठिरका अनुग्रह करके उसे
छोड़ देना ... १९३८
- ३४-राजा विराटद्वारा पाण्डवोंका सम्मान, युधिष्ठिर-
द्वारा राजाका अभिनन्दन तथा विराटनगरमें
राजाकी विजय-घोषणा ... १९४२
- ३५-कौरवोंद्वारा उत्तर दिशाकी ओरसे आकर
विराटकी गौओंका अपहरण और गोपाध्यक्षका
उत्तरकुमारको युद्धके लिये उत्साह दिलाना १९४४
- ३६-उत्तरका अपने लिये सारथि ढूँढ़नेका प्रस्ताव,
अर्जुनकी सम्मतिसे द्रौपदीका बृहन्नलको सारथि
बनानेके लिये सुझाव देना ... १९४६
- ३७-बृहन्नलको सारथि बनाकर राजकुमार उत्तरका
रणभूमिकी ओर प्रस्थान ... १९४८
- ३८-उत्तरकुमारका भय और अर्जुनका उसे आश्वासन
देकर रथपर चढ़ाना ... १९५१
- ३९-द्रोणाचार्यद्वारा अर्जुनके अलौकिक पराक्रमकी
प्रशंसा ... १९५५

४०-अर्जुनका उत्तरको शमीवृक्षसे अस्त्र उतारनेके लिये आदेश	१९५७
४१-उत्तरका अर्जुनके आदेशके अनुसार शमीवृक्षसे पाण्डवोंके दिव्य धनुष आदि उतारना	१९५८
४२-उत्तरका बृहन्नलासे पाण्डवोंके अस्त्र-शस्त्रोंके विषयमें प्रश्न करना	१९५९
४३-बृहन्नलाद्वारा उत्तरको पाण्डवोंके आयुधोंका परिचय कराना	१९६०
४४-अर्जुनका उत्तरकुमारसे अपना और अपने भाइयोंका वधार्थ परिचय देना	१९६२
४५-अर्जुनद्वारा युद्धकी तैयारी; अस्त्र-शस्त्रोंका स्मरण; उनसे वार्तालाप तथा उत्तरके भयका निवारण	१९६४
४६-उत्तरके रथपर अर्जुनको ध्वजकी प्राप्ति; अर्जुनका शङ्खनाद और द्रोणाचार्यका कौरवोंसे उत्पातवृत्तक अपशकुनोंका वर्णन	१९६७
४७-दुर्योधनके द्वारा युद्धका निश्चय तथा कर्णकी उक्ति	१९७०
४८-कर्णकी आत्मप्रशंसापूर्ण अहंकारोक्ति	१९७२
४९-कृपाचार्यका कर्णको फटकारते हुए युद्धके विषयमें अपना विचार बताना	१९७४
५०-अश्वत्थामाके उद्गार	१९७६
५१-भीष्मजीके द्वारा सेनामें शान्ति और एकता बनाये रखनेकी चेष्टा तथा द्रोणाचार्यके द्वारा दुर्योधनकी रक्षाके लिये प्रयत्न	१९७८
५२-पितामह भीष्मकी सम्मति	१९८०
५३-अर्जुनका दुर्योधनकी सेनापर आक्रमण करके गौओंको लौटा लेना	१९८२
५४-अर्जुनका कर्णपर आक्रमण; विकर्णकी पराजय; शत्रुतृण और संग्रामजित्का वध; कर्ण और अर्जुनका युद्ध तथा कर्णका पलायन	१९८४
५५-अर्जुनद्वारा कौरवसेनाका संहार और उत्तरका उनके रथको कृपाचार्यके पास ले जाना	१९८८
५६-अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये देवताओंका आकाशमें विमानोंपर आगमन	१९९३

५७-कृपाचार्य और अर्जुनका युद्ध तथा कौरवपक्षके सैनिकोंद्वारा कृपाचार्यको हटा ले जाना	१९९४
५८-अर्जुनका द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और आचार्यका पलायन	१९९७
५९-अश्वत्थामाके साथ अर्जुनका युद्ध	२००२
६०-अर्जुन और कर्णका संवाद तथा कर्णका अर्जुनसे हारकर भागना	२००४
६१-अर्जुनका उत्तरकुमारको आश्वासन तथा अर्जुनसे दुःशासन आदिकी पराजय	२००६
६२-अर्जुनका सब योद्धाओं और महारथियोंके साथ युद्ध	२००९
६३-अर्जुनपर समस्त कौरवपक्षीय महारथियोंका आक्रमण और सबका युद्धभूमिसे पीठ दिखाकर भागना	२०११
६४-अर्जुन और भीष्मका अद्भुत युद्ध तथा मूर्छित भीष्मका सारथिद्वारा रणभूमिसे हटाया जाना	२०१२
६५-अर्जुन और दुर्योधनका युद्ध; विकर्ण आदि योद्धाओंसहित दुर्योधनका युद्धके मैदानसे भागना	२०१५
६६-अर्जुनके द्वारा समस्त कौरवदलकी पराजय तथा कौरवोंका स्वदेशको प्रस्थान	२०१७
६७-विजयी अर्जुन और उत्तरका राजधानीकी ओर प्रस्थान	२०२१
६८-राजा विराटकी उत्तरके विषयमें चिन्ता; विजयी उत्तरका नगरमें प्रवेश; प्रजाओंद्वारा उनका स्वागत; विराटद्वारा युधिष्ठिरका तिरस्कार और क्षमा-प्रार्थना एवं उत्तरसे युद्धका समाचार पृच्छना	२०२३
६९-राजा विराट और उत्तरकी विजयके विषयमें बातचीत	२०२९
(वैवाहिकपर्व)			
७०-अर्जुनका राजा विराटकी महाराज युधिष्ठिरका परिचय देना	२०३०
७१-विराटकी अन्य पाण्डवोंका भी परिचय प्राप्त होना तथा विराटके द्वारा युधिष्ठिरको राज्य समर्पण करके अर्जुनके साथ उत्तरके विवाहका प्रस्ताव करना	२०३२
७२-अर्जुनका अपनी पुत्रवधूके रूपमें उत्तरको ग्रहण करना एवं अभिमन्यु और उत्तरका विवाह	२०३५

चित्र-सूची

(तिरंगा)

१-भीमसेन और द्रौपदी	१९०७
२-कौचक-वध	१९०७
३-कौरवोंद्वारा विराटकी गायोंका हरण	१९४४

(सादा)

४-युधिष्ठिरद्वारा देवीकी स्तुति	१८५६
---------------------------------	-----	-----	------

५-विराटके यहाँ पाण्डव	१८६२
६-विराटकी राजसभामें कीचकद्वारा सैरन्ध्रीका अपमान	१८८६
७-पाण्डवोंके अन्वेषणके विषयमें भीष्मकी सम्मति	१९२६
८-सुशर्मापर भीमसेनका प्रहार	१९२६
९-अर्जुनका शङ्खनाद	१९६७
१०-(३० लाइन चित्र परमोंमें)	